RESEARCH PLAN PROPOSAL

’अज्ञेय के काव्य में बौद्ध दर्शन और वर्तमान संदर्भ : अध्ययन एवं विश्लेषण’

For Registration to the degree of Doctor of Philosophy

IN THE FACULTY OF ARTS

THE IIS UNIVERSITY, JAIPUR

Submitted to

Dr. Devender Tyagi
Formerly Reader
Department of Hindi
Deshbandhu College
University of Delhi, Delhi

Submited by :

YUGMA SHARMA
Enrolment No.ICG/2012/14852

DEPARTMENT OF HINDI
APRIL, 2013

सूची

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	3 – 10
2.	उपलब्ध सामग्री की समीक्षा	11 – 13
3.	शोध विषय की प्रासंगिकता एवं नवीनता	14 – 16
4.	अध्ययन – प्रविधि	17
5.	शोधार्थी का कार्यस्थल एवं उपलब्ध सुविधाएं	17
6.	अध्याय रचना	18 – 20
7.	संदर्भ ग्रंथ सूची	
	❖ आधार ग्रंथ	21 – 22
	❖ आलोचनात्मक ग्रंथ, निबन्ध और लेख	23 – 25

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी साहित्य की नई कविता के काव्यकारों में 'अज्ञेय' का स्थान सर्वोपरि है । उन्होंने अपने समय के बहुत से काव्यकारों को अपनी काव्य रचना शैली से प्रभावित ही नहीं किया अपितु एक नई काव्य विधा का मार्ग भी प्रशस्त किया । उनके प्रभाव का सहज अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उनके समकालीन जितने भी कवि हुए उनमें से अधिकांश अज्ञेय की शैली से प्रभावित हैं ।

अज्ञेय पर हिन्दी साहित्य में बहुत कुछ लिखा गया है, बहुत शोध कार्य किए गए हैं, किन्तु, उनकी रचनाओं में बौद्ध धर्म के प्रभाव को लेकर जितना लिखा जाना चाहिए था उतना नहीं लिखा गया । प्रस्तुत शोध कार्य इस अभाव की पूर्ति का विनम्र प्रयास है ।

अज्ञेय के विषय में हिन्दी साहित्य में अनेक धारणाएं प्रस्तुत की गई हैं । कुछ विचारक उन्हें कवि के नाते श्रेष्ठ नव–कवि मानते हैं तो कुछ उनके युग को 'अज्ञेय युग' कहते हैं । अज्ञेय के यात्रा–वर्णन, संस्मरण, ललित निबंध सभी कुछ अच्छे लगते हैं किन्तु सबसे अधिक उनकी कविता मन को भाती है । कविता के क्षेत्र में उनका अवदान अमूल्य है । यदि उस समय के साहित्यिक परिवेश पर विचार किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि कविता के क्षेत्र में प्रसाद दिवंगत हो चुके थे; निराला अर्ध विक्षिप्त हो गए थे, पंत आकाशवाणी से जुड़ गए थे और महादेवी ने काव्य रचना को विराम दे दिया था । उनके समय के अधिकांश कवि कविता के अतिरिक्त अन्य कार्यों में व्यस्त थे । ऐसे समय में अज्ञेय ने हिन्दी कविता को आगे बढ़ाया – उसे नई राह दिखाई । उस समय छायावाद की छाया क्षीण हो रही थीं, प्रगतिवाद रूस और चीन को समर्पित था, दोनों ही शैलियां रासोन्मुख हो रही थीं। ऐसे समय में अज्ञेय एक नई काव्य शैली लेकर आए । कुछ आलोचकों ने इसे प्रयोगवाद कहा – किसी ने नई कविता का नाम दिया । किन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि उस समय हिन्दी कविता को एक अभिनव उर्जा की अपेक्षा थी जो उसे अज्ञेय से प्राप्त हुई । उन्होंने बहुत से रचनाकारों को प्रोत्साहित किया ।

अज्ञेय के कृतिव और चिंतन को समझने के लिए उनकी वैचारिक अवधारणाओं पर विचार करना आवश्यक है । अज्ञेय के काव्य पर फ्रायड, रेनिसन एवं अस्तित्ववाद के प्रभाव के अतिरिक्त सबसे अधिक प्रभाव बौद्ध दर्शन एवं चिन्तन का है । हमारे शोध कार्य का प्रतिपाद्य अज्ञेय पर बौद्ध चिन्तन का प्रभाव ही है । अज्ञेय पर बौद्ध चिन्तन के प्रभाव पर विचार करते हुए उनके अतीत पर विचार करना अपेक्षित है क्योंकि बौद्ध चिन्तन का प्रभाव हमारे विचारानुसार उनकी जीवन यात्रा के प्रारंभ में ही उन पर पड़ने लगा था ।

हीरानंद वात्स्यायन इनके पिता थे और वे पुरातत्व विभाग में एक उच्च पद पर आसीन थे । अज्ञेय का परिवार कसया जिला देवरिया में था जो गोरखपुर के पास है । कसया का ही संस्कृत नाम कुशीनगर है जिसे भगवान बुद्ध निर्वाण का स्थान भी कहा गया है । यही कारण है कि उनकी

जीवन यात्रा जब रचनात्मक रूप में बदली तब उन पर गौतम बुद्ध का प्रभाव भी अनेक कृतियों में अंकित हुआ है । अज्ञेय ने 'शेखर – एक जीवनी' में जिन्हें उनका आत्म कथात्मक उपन्यास कहा गया है शेखर के जन्म का विवरण करते हुए कहा है कि जिन खण्डहरों के मध्य शेखर का जन्म हुआ था वे एक बौद्ध विहार के खण्डहर थे । वहां उसी दिन गौतम बुद्ध की अस्थियों की एक मंजूषा निकली थी जिसकी उपासना करके वे भिक्षु उसके पिता के पास अतिथि होकर आये थे वहां आकर जब उन्होंने देखा कि उसी दिन शिशु का जन्म हुआ है तब उन्होंने पिता से कहा – यह शिशु बुद्ध का अवतार है । इसको बौद्ध धर्म की दीक्षा देना ।

अज्ञेय ने बौद्ध धर्म की दीक्षा नहीं ली पर बुद्ध के विचारो का उन पर व्यापक प्रभाव रहा है । सन् 1960 में यूरोप की यात्रा के समय व 'पियेर द क्ववीर' के मठ में भी रहे थे । 'अरी ओ करूणा प्रभामय' की एक कविता 'सम्राज्ञी का नैवेद्य दान' में यह अंकित है कि जापान की सम्राज्ञी बुद्ध मंदिर में आत्म निवेदन करती है । इससे स्पष्ट है कि कवि पर बुद्ध का व्यापक प्रभाव था । किसी भी व्यक्ति के बचपन में उन जगहों का व्यापक प्रभाव होता है जहां वह रहा है । उनके पिता उन अनेक स्थानों पर रहे थे जहां अज्ञेय ने रहकर अनेक प्रभाव आत्मसात किये । इनमें नालंदा, पटना, लाहौर, लखनऊ, श्रीनगर, मद्रास (चेन्नई) जैसे अनेक स्थान हैं । श्रीनगर और जम्मू में रहकर उन्होंने व्यापक प्रभाव आत्मसात किये ।

जब कवि उस संधि युग में हो, जब पुराने को नये से जोड़नें की भूमिका का अनिवार्य निर्वाह करना पड़ें । कवि संभावनाओं से युक्त हो और वह अपने समय के साथ जुड़ किन्तु वह इतना आधुनिक भी न हो और उसका परंपरा से विच्छेद हो । परंपरा के निरंतर प्रवाह के साथ यदि कविता की अभिव्यक्ति होती है तो उसमें उस सारे जीवन दर्शन की पृष्ठभूमि का समाना आवश्यक है जो किसी भी रचनाकार की सामूहिक संस्कृति का अंग बनती है ।

भारतीय दर्शन में सदा आत्मा का व्यापक महत्व रहा है । सभी उपनिषदों में इस तथ्य को व्यापक रूप से अंकित किया गया है । छायावाद में जो कुछ अमुर्त था उसका कारण भारतीय चिंतन रहा है। भारतीय संस्कृति जिस व्यापकता से मनुष्य के रचना संसार का अन्वेषण करती रही है आधुनिक युग में समकालीन जीवन दर्शन में उसकी अभिव्यक्ति मिलती है । देशकाल को लेकर कितने विचारदर्शन हमारे देश में व्याप्त हैं। सृष्टि का चिंतन रहस्यों के जाल में उलझा है और इसके बीच ही वह जीवन के सत्य की खोज करता है । समकालीन चिंतन में स्पेंगलर और आइन्स्टीन तक ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनका तत्वदर्शन भारतीय संस्कृति में मिल जाता है । सत्य की खोज के कई मार्ग हैं । एक मार्ग भावना का और दूसरा बुद्धि का है । कवि बिम्बों की भाषा में सत्य की खोज करता है । अज्ञेय के शब्दों में – ' जब कवि प्रतीकों की दुनिया में विचरण करता है तो प्रतीकों का संसार अनुभूतियों का संसार बन जाता है' ।

कवि के लिए आवश्यक है कि वह अपनी अनुभूति के एक–एक शब्द को व्यक्त करते दे भले ही वह कितना असभ्य हो, जंगली हो या आवरणहीन हो पर विश्वास से ही सत्य मिलता है और यही वह उस छाया कथा के पास चला जाता है जो उसकी विश्वप्रिया है । विश्वप्रिया की कविताओं

में जो स्वप्न है उसमे एक रहस्य है जहां वह छाया को नहीं पहचानता । उनके शब्दों में –

वह एक स्वप्न है, इसलिए सच है
वह कभी हुई नहीं, इसलिए सदा से है,
मैं उससे अत्यंत परिचित हूं,
इसलिए वह सदा मेरे साथा चलती है, मैं उसे पहचानता नहीं,
इसलिए वह मेरी अत्यंत अपनी है, मैंने उसे प्रेम नहीं किया,
इसलिए मेरा सारा विश्व उसके अदृश्य पैरों में लौट कर
एक भव्य विस्मय से उसका आह्वान करता है,
"प्रिये ! छाया, छाया, तुम कौन हो?"

पुरूष अपनी प्रकृति की खोज करता है क्योंकि उस प्रकृति में ही उसका रहस्य है और यही उसका संसार भी है । अज्ञेय का जीवन दर्शन इस रहस्यवाद से जुड़ गया है जो उनकी आत्मा का ही एक रूप है । इस रहस्यवाद में ही उनके अहं का विलय हो जाता है । अज्ञेय ने विश्वप्रिया के माध्यम से जिस छाया की खोज की है वह उनकी आत्मा का अस्तित्व बन जाती है । जो भी जीवन सत्य है वह सुन्दर है और शिव भी है किन्तु आवश्यम नहीं है कि वह सत्य मेरा ही हो या मुझसे बंधा हो । वह तो मरणधर्मा है जिसकों निस्संग समर्पण से पाया जा सकता है । और यही जीवन का सत्य है।

आत्मा की अनश्वरता को गीता में इस प्रकार अंकित किया है –

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणिं नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्तापो न शोषयति मारूतः।

उपनिषदों ने भी आत्मा के स्वरूप को सर्वथा अंतिम और उच्चतम माना है । अज्ञेय आस्था को ही आत्मा मानते हैं और यह आत्मा का अस्तित्व बन जाता है ।

अभी न हारो,
अच्छी आत्मा,
मैं हूं , तुम हो,
और अभी मेरी आस्था है ।

यह आत्मा ही संकल्पात्मक अनुभूति के माध्यम से रहस्य बन जाती है ।

कवि की दार्शनिकता उपनिषदों से प्रभावित है फिर भी समकालीन नहीं है । वह ईश्वर से अलग नहीं है फिर भी वह आत्मा के अन्वेषण से जुड़ी है । सहस्त्रों वर्ष की ऐतिहासिक परंपरा और लाखों वर्षों की जातीय वसीयत के साथ वह अनुभव करता है कि सनातन जीवन की तीव्रता उसके भीतर समा गई है ।

अज्ञेय का जीवन दर्शन भारतीय संस्कृति से जुड़कर भी इस अर्थ में समकालीन है कि वह प्रकृति और पुरुष के बीच, स्त्री और पुरुष के बीच एक जीवन सत्य की खोज करता है । वह अपनेपन से मुक्त होकर भी मुक्त नहीं हो पाता, वह यातना से गुजर कर आराधना करता है । जड़ अवस्था में स्थायित्व नहीं होता, चेतना की आवश्यकता होती है । वह स्पष्ट करते हैं कि वह केवल पुरुष नहीं, मानव नहीं, एक स्वतंत्र और सक्रिय शक्ति है ।

अज्ञेय ने अपने जीवन दर्शन को प्रकृति और पुरुष के जिन संबंधों से बुना है वह वेदान्त के निकट हैं। उनकी कविताओं में महाशून्य की अवधारणा भी जीवन दर्शन के रूप में आती है। बौद्ध धर्म में महाशून्य का विवेचन अनेक रूपों में हुआ है । महाभारत में भी विष्णु के अनेक नाम हैं जिनमें एक शून्य भी है, इस शून्य का विवेचन दार्शनिक नागार्जुन ने अनेक रूपों में किया है । नाथ पंथ में भी इसे परमतत्व के रूप में स्वीकार किया गया है । बुद्ध का निर्माण महाशून्य के रूप में अंकित किया गया है । आत्मा का इस महाशून्य से गहरा संबंध है । महाशून्य के यथार्थ को जिस प्रकार आत्मा दर्शन और बौद्ध दर्शन में सामने रखा गया है उसे कवि ने चक्रान्तशिला की कविताओं में व्यक्त किया है । अज्ञेय की कविताओं में महाशून्य की यह व्यापकता एक विराट कल्पना के रूप में मिलती है । वृहदारण्यक उपनिषद में इसके अनेक नाम हैं जिनमें अक्षर भी प्रमुख स्थान रखता है । बौद्ध दर्शन का शून्य अस्तित्व और अनस्तित्व के बीच में रहा है । इसे प्रतीत्य समुत्पाद के तत्व रूप में भी अंकित किया गया है । शून्य का जो भी विस्तार हुआ है उसका संबंध अतीत या भविष्य से जुड़कर नहीं थमा है, यह तो एक निरंतर विस्तार का प्रतीक है । वह काल का अतिक्रमण भी कर लेता है । शून्य की अनेक इकाइयां होती हैं और जिनका कोई अस्तित्व नहीं होता । वह अनंत की ओर जाती है । अज्ञेय ने कहा है –

> “महाशून्य आकाश हमारा पथ है
> छोड़ों चिंता बार–पार की ।”

सभी जो वृत से निकलता है शून्य में विलय हो जाता है । शून्य की व्यापकता को व्यक्त करते हुए कवि कहता है –

> “वह तो सब कुछ की तथता थी
> महाशून्यए वह महामौन
> अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
> जो शब्दहीन, सबमें गाता है ।”

महाशून्य की इस विराटता को चक्रांतशिला की सभी कविताओं में व्याप्क रूप में व्यक्त किया गया है । महाशून्य क शिविर असीम है । जो उपर छा रहा है और पृथ्वी पर महामौन की सरिता बिना दिशाओं के बहती है । आत्मा अपने ही से खुलती रहती है । कवि मौन से जुड़ जाता है और वहीं वह अपने आपको पहचानने का प्रयास करता है । यह सन्नाटा मौन से जुड़कर उसे विराट से परिचित कराता है कवि कहता है –

“मौन का हीं सूत्र
किसी अर्थ को मिटायेबिना
सारे शब्द क्रमागत
सुमिरनी में पिरोता है ।”

वह अनुभव करता है कि यह मौन अपरिर्वत है, अपौरूषेय है जो सबको समोता है । कवि का दर्शन संवेदना की यात्रा से गुजरता है । वह विचारों को सपनों में माध्यम से अंकित करता है, प्रतीकों की भाषा में आकार देता है । अंधेरे के पीछे रात में जागते हुए वह अनुभव से गुजरता है । इसे इस तरह व्यक्त किया गया है –

“मैंने उठ कर खोल दिया वातायन –
और दुबारा चौकाः
यह सन्नाटा नहीं
झरोखे के बाहर ईश्वर गाता था ।”

महाशून्य के साथ वह आत्मा का विवाह करवाता है । यह आत्मा कन्या है जिसकी भांवरें महाशून्य के साथ रची जातीं हैं । कवि के ही शब्दों में –

“अरी ओ आत्मा री
कन्या भोली कंवारी
महाशून्य के साथ भांवरें तेरी रची गयी ।”

आगे वह कहते हैं – आत्मा का वरण महाशून्य के साथ ही हुआ है । वह महाशून्य की ही अनुगामिनी है । इस वरण के बाद की वह परिणीता के रूप में सम्पृक्त होतीं है । इस महाशून्य में ही कवि को अपना अर्थ मिल जाता है । वह कहता है –

“महाशून्य को भजता हुआ भी मै
पराजय को बरजता हूं
चेतना मेरी बिना जाने
प्रभा में निमजतीं है : मैं स्वयं
उस ज्योति से अभिषिक्त, सजता हूं”

महाशून्य का अर्थ यह नहीं है कि कवि अपनी कविता में दर्शन तक सिमट गया, यही कारण है कि चंक्रातशिला में वह अंधकार में गयी काली रेखा के पार तक आ जाता है और उस द्वार तक पहुंचता है जो उसे प्रकाश के पारावार तक ले जायेगा ।

बुद्ध के प्रभाव के साथ ही अद्वैतभाव अज्ञेय में रहा है । वस्तुतः भारतीय संस्कृति और दर्शन ने उन्हें प्रभावित किया है जिसकी अभिव्यक्ति आज की आधुनिकता और समकालीन संदर्भ में हुई है । आंगन के पार द्वार या द्वार के पार आंगन के भीतर लगातार मौन और यह कथन मौन की अभिव्यंजना है । स्पष्ट करता है कि वह मौन होकर भी विराट के साथ जुड़ना चाहता है । वह सन्नाटे के साथ मौन है । ध्यान की इस अवस्था में ही यह विराट से जुड़ता है । व्यक्ति लगातार उस असीमसत्ता को पकड़ने की कोशिश करता है पर यह संभव नहीं हो पाता उसके ही शब्दों में –

जो तेरा है, पल्लवित हुआ है रंग–रूप धर रातधा
पर जो तू है नहीं पकड़ में आता ।

अज्ञेय ने भारतीय तत्वदर्शन, उपनिषद और बौद्ध दर्शन सभी का समावेश कर भारतीय संस्कृति का एक व्यापक रूप अपनी कविताओं में अंकित कर दिया है ।

अज्ञेय ने आत्मान्वेषण के माध्यम से रहस्य चिंतन की इस प्रवृति को व्यापक रूप दिया है । महाशून्य का शिविर असाध्य वीणा में आता है । यह अपने आप में उस विराट सत्य का प्रतीक है जिसे हम रहस्य की आध्यात्मिक चेतना से जोड़ते हैं । आत्मान्वेषण की प्रवृति के लिए अंतर्मुखी होकर कभी – कभी हम बाहरी यथार्थ की उपेक्षा कर देते हैं । डॉ0 विद्यानिवास मिश्र ने कहा है कि 'आंगन के पारद्वार' में अज्ञेय का विशाल के साथ एकाकार वैसा ही है जैसा कि नरेन्द्रनाथ का विवेकानंद के रूप मे परिवर्तित हो जाना । अज्ञेय की अन्तर्मुखी वृति आत्मान्वेषण से जुड़ती हैं; वस्तुतः वह अपने अस्तित्व की खोज से जुड़ी है । अज्ञेय का कथन है अस्ति पहले है भवति बाद में। उनके शब्दों में – अगर मैं अपने अस्तित्व के बारे में निःशंसय नहीं हूं – यानी अगर यह आस्था मुझमें नहीं है कि 'मैं हूं' और यह होना और यह 'मैं' एक विविक्त, अद्वितीय, स्वतंत्र, आत्म–चेतन और आत्मानुशासित मैं का होना है, एक केन्द्रयुक्त सत्ता, 'होना' जिसकी परिधि है और केन्द्र जिसका 'मैं' हूं – तो मैं किसी बात के सबंध में भी असंदिग्ध नहीं हो सकता । तब मैं अनिवार्यतया चिंता का शिकार हूं और रहूंगा : आध्यात्मिक चिंता, नैतिक चिंता का, धार्मिक चिंता का, सांवेदनिक चिंता का । सत्ता की पहचान में अच्छा या बुरा कुछ नहीं है, वह पाप–पुण्य से परे हैं, वह केवल अस्ति की, वास्तविकता की, रिएलिटी की, रचना की पहचान है जिसके अपने–आप में अच्छे बुरे होने का प्रश्न ही नहीं उठता, पर मूल्य संबंधी सब निर्धारणाएं और निश्चयात्कताएं जिसके बाद आती हैं ।

अज्ञेय ने अस्तित्व या सत्ता का प्रश्न भी उठाया है । अस्ति को जान लेने पर, मृत्यु से घिरा हुआ होने पर भी व्यक्ति भयभीत नहीं होता । आधुनिक युग में अस्तित्ववाद के अन्तर्गत स्वतंत्रता और अस्तित्व को साथ जोड़कर भी इसका समय से संबंध अंकित किया गया है । मृत्यु और भय को सामने रखकर जिन संभावनाओं की खोज की गई है । उनका समकालीन मनुष्य से गहरा संबंध है।

हेडगर ने कहा है – 'संसार की सापेक्षता में ही व्यक्ति को अपने जीवन की अनुभूति होती है । व्यक्ति संसार की वस्तुओं के साथ संबद्ध है और वह स्वयं के साथ भी संबद्ध है । व्यक्ति के कार्य संसार की वस्तुओं को लक्ष्य मानकर होते हुए भी उसके आंतरिक उद्‌देश्य के लिए ही संपन्न होते हैं। यह अस्तित्व सचेतन या प्रतीयमान न होकर अनुभवगम्य होते हैं । व्यक्ति अपनी संपर्कात्मक क्रियाओं के कारण अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक नहीं रह पाता और अपने भाग्य के माध्यम से निरंतर अपने अस्तित्व की संभावनाओं की अनुभूति करता है ।

अज्ञेय का जीवन दर्शन उस मनुष्य का जीवन दर्शन है जो अपनी आत्मा के अन्वेषण में लगातार अपने को पहचानता है । वह उपनिषदों के विराट सत्य और गीता के अनुसंधान से अस्तित्ववाद के समकालीन स्वरूप तक संप्रेषित होता है। यदि दुख जीवन का मूलभूत आधार है तो वह अस्तित्ववाद की व्यथा से नहीं, बुद्‌ध की दुःखवाद से पहचान में आयेगा । भारतीय जीवन दर्शन ने जिस अस्ति की पहचान की है और उसे जिस नास्ति में पाया है वह विराट का शून्य है ।

उपसंहार

इस प्रकार हमारे शोधग्रंथ का प्रमुख प्रतिपाद्य अज्ञेय के चिन्तन पर बौद्ध चिंतन का प्रभाव हीं है । किन्तु इसी के साथ औपनिषद चिंतन के प्रभाव पर भी हमने विस्तार से चिंतन व चर्चा की है । हमारे विचार में – अज्ञेय अस्तित्ववाद की अपेक्षा भारतीय जीवन दर्शन के अधिक निकट हैं जहां मृत्यु का भय नहीं है । बल्कि मृत्यु की पहचान है । जीवन की प्रासंगिकता और उसके अर्थ की वास्तविकता का पता लगता है । निरंतर दृश्यमान में एक अदृश्य है । इस तथ्य को कवि ने अनेक कविताओं में अभिव्यक्ति किया है । इस प्रकार अज्ञेय वेदान्त के भी निकट है । यही उनकी रहस्य यात्रा का यथार्थ रूप हैं । अज्ञेय के रहस्यवाद को परिभाषित करने के लिए कहा जा सकता है – कि उन पर उपनिषद, बौद्ध धर्म के शून्यवाद, अस्तित्ववाद तथा जैन धर्म का भी प्रभाव मिलता है ।

उपलब्ध सामग्री की समीक्षा

अज्ञेय अपनी सृजनात्मक प्रक्रिया में बहुमुखी प्रतिभासंपन्न कलाकार थे । छायावादी युग के बाद साहित्य की सभी विधाओं मे अपनी लेखनी के जादू से साहित्य जगत में अपना ठोस व्यक्तित्व स्थापित करने वाले अज्ञेय समय की छाप को ग्रहण करते हुए अपनी प्रतिभा को उभारते हुए नज़र आते हैं । अज्ञेय महान कविकार हैं जिन्होंने कविता को नवीन आयाम प्रदान किए । उन्होंने अपने काव्य में विभिन्न भावों के अतिरिक्त भिन्न–भिन्न दर्शन का भी वर्णन किया है जिसमें बौद्ध दर्शन का प्रभाव व वर्णन अपने आप में विशेष है ।

बौद्ध धर्म में जिन चार आर्य सत्यों की प्रतिष्ठा हुई है । उनमें मुख्य बात है कि संसार दुःखपूर्ण है । संसार के सभी धर्मो एवं दर्शनों के केन्द्र में यह तथ्य रहा है कि दुःख है । इसी आधार पर अज्ञेय ने पीड़ा के दर्शन को आत्म–परिष्कार का माध्यम माना है । अज्ञेय के विचार से 'दुःख की छाया एक तरह की तपस्या है उससे आत्मा की शुद्धि होती है । उनके इसी भाव में करूणा का दर्शन भी होता है वह इसी विचार को अपनी कविता – 'पहला दौंगरा' में व्यक्त करते हुए लिखते हैं –

दुःख सबको मांजता है
और – चाहे स्वयं सब को मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु –
जिनको वह मांजता है
उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें ।

अज्ञेय के काव्य पर बहुत से शोध कार्य हुए तथा अनेक आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाश में आयीं । लेकिन उनके द्वार प्रयुक्त बौद्ध दर्शन या कहें उनके 'काव्य पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव' पर हिन्दी साहित्य में आलोचनात्मक पुस्तकों का नितांत आभाव है ।

अज्ञेय का हमेशा यही विचार रहा है कि किसी भी दर्शन को आत्मसात करने के लिए उसका अध्ययन करना आवश्यक है तभी कवि पर उस दर्शन विशेष का प्रभाव प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उपलब्ध सामग्री को नि.लि. कोटियों में रखा जा सकता है –

1, बौद्ध दर्शन पर आधारित पुस्तकें
2, अज्ञेय पर शोध से संबंधित पुस्तकें
3, अज्ञेय पर लिखी फुटकर निबंधों वाली पुस्तकें
4, अज्ञेय का हिन्दी कविता को अवदान ।

क, **बौद्ध दर्शन पर आधारित पुस्तकें** –

इस कोटि में आने वाली कुछ पमुख पुस्तकें निम्न हैं –

1, **बौद्ध दर्शन एवं अन्य भारतीय दर्शन** :–

डॉ0 भरत सिंह उपाध्याय द्वारा लिखित यह पुस्तक दो खण्डों में विभक्त करने के पश्चात् उनके स्वरूप, तत्वों का विश्लेषण किया है ।

2, **बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष** :– पी.वी. बापट द्वारा लिखित इस पुस्तक में श्रीमान बापट ने बा ौद्ध धर्म का आरंभ, बुद्ध चरित, चार बौद्ध परिषदें, अशोक एवं बौद्ध–धर्म का विस्तार, प्रधान शाखाएं संप्रदाय, बौद्ध साहित्य, शिक्षण, बौद्ध कला, बौद्ध कला, बौद्ध महत्व के स्थान, उसमें आने वाले उत्तरकालीन परिवर्तन व आधुनिक संसार में बौद्ध धर्म का स्थान आदि पर उन्होंने गहन अध्ययन कर लिपिबद्ध किया है ।

3, Buddhism Core Ideas – Master Hsing Yun.

4. Revival of Budhism in Modern India – L. Canadi

5. बौद्ध धर्म दर्शन – आचार्य नरेन्द्रदेव

6, बौद्ध–दर्शन मीमांसा – आचार्य बलदेव उपाध्याय

ख, **अज्ञेय पर शोध से संबंधित पुस्तकें** :

1, अज्ञेय की कविता :– रमेश ऋषिकल

2, अज्ञेय का अन्त : प्रक्रिया साहित्य :– डॉ0 मथुरेश नन्दन कुलश्रेष्ठ

3, अज्ञेय काव्य का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन :– डॉ0 फूलवंत कौर

4, अज्ञेय : कवि कर्मसंकट – कृष्णदत्त पालीवाल

5, अज्ञेय : विचार और स्वराज – कृष्णदत्त पालीवाल

6, अज्ञेय : विचार और कविता – डॉ0 राजेन्द्र मिश्र

7, अज्ञेय की काव्य चेतना – डॉ0 कृष्ण भावुक

8, अज्ञेय : एक अध्ययन – भोलाभाई पटेल

9, अज्ञेय के काव्य में क्षण – सुनीता सक्सेना

10, अज्ञेय और समकालीन काव्य – डॉ0 नरेन्द्र रविवर्मा

ग, अज्ञेय पर फुटकर निबंध वाली पुस्तक

1, अज्ञेय से सात संवाद

2, अज्ञेय : विश्वनाथप्रसाद तिवारी

3, अज्ञेय से साक्षात्कार – कृष्णदत्त पालीवाल

4, अज्ञेय और इलियट – डॉ0 अरूण भारद्वाज

5, अज्ञेय : साहित्य और चिन्तन – प्रो, नामदेव जासूद

6, कवियों के कवि : अज्ञेय – डॉ0 शंकर वसंत मुदगल

घ, अज्ञेय का हिन्दी कविता को अवदान

अज्ञेय कुछ सीमा तक अज्ञेय अवश्य रहे परन्तु यह बात भिन्न है कि अज्ञता को उन्होंने भिन्न संदर्भ में एक काव्य मूल्य और आत्म–मूल्य माना है –

"रहा अज्ञ निज को कहा अज्ञेय
हुआ विज्ञ सो रहा अज्ञेय।।"

कवि ने धर्मशास्त्र, नृतत्वशास्त्र, इतिहास, दर्शनशास्त्र, काव्य मिथक, विज्ञान, यूरोपीय तथा भारतीय दर्शन, प्राचीन तथा समकालीन काव्य, काव्यशास्त्र और विभिन्न काव्यान्दोलनों का व्यापक अध्ययन किया था । वस्तुतः कविता एक यज्ञ है । विगत पीढ़ियों के कवियों ने अपने भिन्न एवं विशिष्ट परिवेश को, उद्‌गारों को व्यक्त किया उन्हीं सूक्ति संदर्भों एवं विचार – खण्डों को नये सिरे से परिभाषित करके ही अज्ञेय जी ने अतीत को वर्तमान की प्रासंगिकता का आधार बनाया और इतिहास बोध का प्रमाण दिया है । अज्ञेय जी ने साहित्य जगत में नवीन रचनाओं का प्रारंभ किया तथा अभिव्यंजना के तरीकों से जूझते हुए उन्हें बदलने का प्रयास किया है वह मात्र साहित्य ही नहीं बल्कि भाषा के भी साधक थे । उन्होंने नए प्रयोगो के साथ नई कविता की शुरूआत की । उनके काव्य में रहस्य–वाद, आध्यात्मिक व अन्वेषण का विस्तार मिलता है । उन्होंने कविता को रोमांटिक अनुभूति से निकालकर सामाजिक चेतना की ओर उन्मुख कर यथार्थ का धरातल प्रदान किया । 'अज्ञेय' तथा 'तारसप्तक' के बहुत से कवियों ने बार–बार प्रयोग शब्द का उल्लेख किया । जिसके कारण प्रयोगवादी धार अस्तित्व में आ सकी । प्रयोगवादी कवियों ने अभिव्यक्ति की जिन अभिनव विधाओं का उद्‌घाटन किया और विषयवस्तु के जिन नए रूपों की कल्पना की वे एक प्रकार से

नयी कविता का मेरुदंड सिद्ध हुए वात्स्यायन जी के काव्य पर जापानी जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, शिव दर्शन का प्रभाव भी मिलता है । उन्हें संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान था जिसके कारण उनका काव्य आध्यात्म दर्शन से भी प्रभावित रहा । उन्होंने प्रतीकवादी तथा बिम्बवादी आंदोलनों से प्रेरणा ग्रहण की । इसके अलावा वह संत, भक्त, संस्कृत, हिन्दी व बंगाली कवियों से भी प्रभावित है । पश्चिम के बहुत से साहित्यकारों का प्रभाव भी अज्ञेय जी पर देखा गया है । उन्होंने दो संस्कृतियों तथा उनकी सभ्यताओं का वर्णन एवं तुलनात्मक स्वरूप अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है । प्रेम, प्रकृति, यथार्थ, आत्मान्वेषण, दर्शन, रहस्यवाद, अनुवाद, यात्रा वृतांत, पत्रकारिता, संपादन, आदि विविध विधाओं पर अज्ञेय ने नवीन प्रयोग एवं कार्य किए तथा अन्य आधुनिक कवियों के लिए भी नई राहों के द्वार खोले तथा अपने जैसे नवीन विचारधारा के कवियों को भी प्रोत्साहित किया ।

संक्षिप्त : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का हिन्दी काव्य में अमूल्य अवदान है यदि उस समय अज्ञेय कविता को अपनी कलम का कांधा नहीं देते तो कविता का अस्तित्व बचा पाना असंभव था । उनके समय के अधिकांश कवि कविता के अतिरिक्त अन्य कार्यों में व्यस्त थें । ऐसे समय में अज्ञेय ने जर्र–जर्र होती कविता को आग बढ़ाया और नई राह दिखाई । उस समय हिन्दी कविता को एक अभिनव उर्जा की जरूरत थी जो उसे अज्ञेय से प्राप्त हुई । उन्होंने बहुत से रचनाकारों को प्रोत्साहित किया । इस तरह अज्ञेय कविता के श्रेष्ठ नव–कवि है तथा प्रयोगवाद के समय को 'अज्ञेय–युग' से भी संबोधित किया जाए तो अतिशोक्त नहीं होगा । आधुनिक हिन्दी साहित्य की नई कविता के काव्यकारों में 'अज्ञेय' का स्थान सर्वोपरि है ।

प्रस्तावित शोध कार्य की प्रासंगिकता एवं नवीनता

आधुनिक युग के हिन्दी काव्य – साहित्य में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय का नाम कितने हीं रूपों में सर्वोपरि कहा जा सकता है । पहला रूप उनकी काव्य विद्या की अनुपमता और अभिनवता है । जिसे प्रयोगवादी या नयी कविता की संज्ञा से संबोधित किया जा सकता है । इस काव्य शैली के द्वारा अज्ञेय ने एक प्रकार से एक नई काव्य शैली के युग का सूत्रपात किया । कविता की विधा को एक नया मोड़ दिया । यह विधा अभिव्यक्ति के क्षेत्र में अपनी गुणात्मक भिन्नता को लेकर आगे बढ़ी और उसने बड़े पैमाने पर अनेक कवियों को प्रभावित किया ।

अज्ञेय के कवि व्यक्तित्व का दूसरा रूप अधिक महत्वपूर्ण है । इसलिए क्योंकि वह बहुत से कवियों का शैली की दृष्टि से प्रेरणा स्त्रोत बना । अज्ञेय के इस दोनों की रूपों को लेकर हिन्दी साहित्य में बहुत कुछ लिखा गया है और बहुत सा शोध कार्य भी किया गया है । किन्तु अज्ञेय के काव्य जगत को अपनी उपजीव्यता (प्राणों का संचार करने वाली) से समृद्ध करने वाले भारतीय दर्शन और बौद्ध दर्शन की प्रभावशीलता की उनकी कविता के संदर्भ में स्वतंत्र रूप से समीक्षा नहीं की गई । मैंने प्रस्तुत शोध विषय के द्वारा एक ओर तो हिन्दी साहित्य के शोध जगत में इस अभाव को भरा है तो दूसरी ओर उनके काव्य जगत पर उन दोनों ही दर्शनों के प्रभाव की विस्तार से मींमासा की है । यह मीमांसा ही मेरे शोध कार्य की नवीनता और प्रासंगिकता है ।

अज्ञेय के काव्य में इन दोनों ही दर्शनों का प्रभाव प्रचुर मात्रा में देखा जा सकता है । उस समय के धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से उथल–पुथल भरे पराधीनता के परिवेश में अज्ञेय ने इन दोनों ही दर्शन की विचारधारा को अपनी कविता का आधार बनाकर अपने पाठकों को जो संदेश दिया वह पूर्णतः प्रासंगिक था।

साहित्य मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से संबंद्ध होता है । साहित्य में कवि की अपनी भावनाएं प्रतिफलित होकर उसे प्राणिमात्र से जोड़ देती है । ये भावनाएं उसकी आंतरिक प्रेरणाओं को व्यंजित करती है। उस दृष्टि से अज्ञेय के वैचारिक जगत पर मैंने दोनों ही दर्शनों के प्रभाव को ढूंढकर उसकी समीक्षा करने का प्रयास किया है ।

अज्ञेय मुख्यतः कवि हैं । वे वेदान्त या बौद्ध दर्शन के प्रचारक नहीं है । वे इन दोनों ही दर्शनों से पर्याप्त मात्रा में प्रभावित तो है किन्तु एक वेदान्ती पंडित तथा बौद्ध धर्मानुयायी श्रमण की भांति उपासक नहीं है । वे गहराई से मानवतावादी है । उनके साहित्य का एक पक्ष क्रांतिकारी भी है, संघर्ष का पक्षपाती भी है, सामाजिक चेतना को प्रबुद्ध (जागृत करना) करने के साथ–साथ कलात्मक दृष्टि से उदात्त भी है। किन्तु सहृदय पाठक को समयानुरूप संदेश देने के लिए दोनों की दर्शनों से पर्याप्त मात्रा से प्रभावित भी हैं । उसे प्रभाव का अन्वेषण ही हमारे शोध कार्य का प्रतिपाद्य है ।

बौद्ध धर्म सिद्धांततः वैदिक धर्म के प्रतिद्वन्द्वी मत के रूप में उभरकर आया । यह मत एक प्रकार से लोक धर्म का संस्थापक कहा जाता है । यह लोकधर्म का प्रचार जनता की भाषा में करने का पक्षपाती है ; धार्मिक कर्मकाण्ड का विरोधी है निर्वाण की प्राप्ति को जीवन का उद्देश्य समझता है । इसके दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार यह संसार असार है, काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ आदि मनुष्य के शत्रु हैं । इस धर्म में सीमित आवश्यकताएं एवं अनुशासित जीवन साधक के लिए आवश्यक माना गया है । एकान्त जीवन और भिक्षावृति इस मत के अनुयायी का आदर्श है । आचरण की शुद्धता एवं दार्शनिक गहराई के कारण इसका प्रचार – प्रसार तो दूर तक हुआ ही । किन्तु साथ ही यह अनुयायिओं के लिए एक उपयोगी रसायन भी सिद्ध हुआ । अज्ञेय की कविता बौद्ध दर्शन की गहराई से मंडित है । अज्ञेय पाठक वर्ग को इस गहराई के आधार पर ही जीवन की समस्याओं और दुर्बलताओं के समाधान का संदेश देते हैं ।

यह सर्व विदित है कि बुद्ध ने जरा, रोग तथा मृत्यु के कारण दुःख से छुटकारा पाने के लिए (मोक्ष के लिए) प्रव्रज्या ग्रहण की और सब कुछ त्याग कर दुःख पर विचार करने के लिए जंगल में एकांत में रहने का निर्णय किया । वह दुःख के कारणों और दुःख निवारण के उपायों को ढूंढना चाहता था। दुःख विषयक अवधारणा के विषय में अज्ञेय का विचार है –

दुःख सबको मांजता है
और चाहे स्वयं को मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु,
जिनको वह मांजता है
उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त करें ।

बौद्ध मान्यता का 'अप्पो दीपो भव' अज्ञेय का यह दीप अकेला है । इस अकेले दीपक के स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए अज्ञेय कहते हैं –

'दीपक हूं, मस्तक पर मेरे अग्नि शिखा है नाच रही'

इसके अतिरिक्त अज्ञेय की बहुत सी कविताएं बौद्ध कथाओं और दृष्टांतों के संदेशों को अपने में समाए हुए है । उन्होंने जीवन की समस्याओं का समाधान बौद्ध दर्शन में ढूंढने का प्रयास किया है। वे बौद्ध जीवन दर्शन को सार्वभौम अन्तरचेतना से जोड़कर उसे एक सशक्त आधार देना चाहते हैं।

इसके अतिरिक्त अज्ञेय ने उपनिषदों की दार्शनिक अभिरूचियों को भी काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी है। उपनिषदों के आधार पर ही उन्होंने निराशा और असंतुष्टि से मुक्ति पाकर जीवन के जीने पर बल दिया है । कवि संसार की कठिनाइयों का निराकरण औपनिषदिक मान्यताओं के अनुसार करने की प्रेरणा देती है, उनके आगे समर्पण की नहीं । असत् से सत् की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर होने का भाव उनकी कविताओं में अनेक स्थलों पर अभिव्यक्त हुआ है ।

अन्त में इतना कहकर ही मैं अपने शब्दों को विराम देना चाहती हूं कि विद्वज्जनों के आर्शीवाद एवं अनुग्रह से मुझे वह बौद्धिक क्षमता प्राप्त हो जिससे मैं अज्ञेय के काव्य में निहित 'बुद्ध हृदय' और वेदान्त के 'सोऽहम्' के भावों को समझकर कवि की प्रतीकात्मक भाषा में निहित उनकी गंभीर अनुभूतियों के सौन्दर्य को उद्घटित कर सकूं ।

शोध अध्ययन प्रविधि

1, काव्य का सम्यक अध्ययन

2, आगमन, निगमन प्रणाली

3. तुलनात्मक विधि

4, पत्राचार विधि, दूरभाष एवं वार्तालाप

5. विश्लेषण

शोध का कार्य स्थल एवं उपलब्ध सुविधाएं

शोद्यार्थी अपना कार्य दी आई.आई.एस. विश्वविद्यालय से कर रहा है । अतः मुख्य कार्यस्थल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध आई.सी.जी. महाविद्यालय का प्रागंण होगा जिसमें सभी प्रकार की सुविधाएं – पुस्तकालय, कम्प्यूटर, इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है । इसके अतिरिक्त निम्नलिखित पुस्तकालयों में भी शोध कार्य से संबंधित आवश्यक पुस्तकें मौजूद है जो शोध कार्य के लिए विशेष महत्व रखती हैं । अतः इन पुस्तकालयों में बैठकर भी कार्य किया जाएगा ।

1. केन्द्रीय पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

2. साउथ कैम्पस पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

3. तीन मूर्ति पुस्तकालय, तीन मूर्ति स्मारक, नई दिल्ली

4. केन्द्रीय पुस्तकालय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

5. रामाकृष्ण मिशन पुस्तकालय, रामाकृष्ण मार्ग, नई दिल्ली

6. सेन्ट्रल लायब्रेरी, दिल्ली

अध्याय रचना

'अज्ञेय के काव्य में बौद्‌ध दर्शन एवं वर्तमान संदर्भ'

विषय प्रवेश :–

(क)

- विषय चयन के कारण
- विषय की महता व मौलिकता
- संबंधित विषय पर शोध का आभाव
-

(ख)

- अज्ञेय : जन्म, परिवेश एवं शिक्षा
- व्यक्तित्व की रेखाएं

(1) प्रथम अध्याय : अज्ञेय की जीवन दृष्टि और उसका वैचारिक धरातल

- जीवन दृष्टि का स्वरूप
- जीवन दृष्टि के आधायक तत्व
- वैचारिक धरातल का स्वरूप
- वैचारिक धरातल का दार्शनिक स्वरूप
- औपनिषद चिन्तन का प्रभाव
- बौद्‌ध दर्शन का प्रभाव

(2) द्वितीय : औपनिषद चिन्तन एवं अस्तित्ववादी चिन्तन का प्रभाव

(क) औपनिषद अवधारणा

- अज्ञात से ज्ञात की ओर
- प्रकृति के अन्तस की खोज
- आत्मा का स्वरूप – बोध
- संसार का स्वरूप
- श्रेय और प्रेय का मार्ग
- माया का यथार्थ
- भाव का स्वरूप

(ख) अस्तित्ववादी चिन्तन की अवधारणा

- अस्तित्ववाद और स्वतंत्रता
- अस्तित्ववाद और चरमशून्य
- अस्तित्ववाद और अस्मिता

(3) तृतीय अध्याय : बौद्ध दर्शन की अवधारणा

(क) बौद्ध दर्शन के प्रमुख तत्व

(ख) धार्मिक तत्व

- नैतिक मानदण्ड
- शरीर और मन का संयमन
- वैदिक कर्मकाण्ड का विरोध
- ईश्वरवाद का निराकरण
- मनुष्य की मुक्ति के साधन – सम्यक ज्ञान और सम्यक प्रयत्न
- कर्म का महत्व
- अद्वैतवाद

(ग) सामाजिक तत्व

- जातिवाद का विरोध
- कुकर्मों का विरोध
- प्रव्रज्या का अधिकार
- ब्राह्मण परम्पराओं का विरोध
- मानसिक, वाचिक ओर कायिक शुचिता

(4) चतुर्थ अध्याय : अज्ञेय के काव्य में मिथकीय अवधारणा

(क) मिथक का दार्शनिक और धार्मिक पक्ष

(ख) काव्यात्मक उदात्तता का माध्यम

(ग) मिथकीय चरित्रों और घटनाओं का समावेश

(घ) मिथकीय प्रतीकों का प्रयोग

(ड.) काव्य रचना पर समन्वित प्रभाव

(5) पंचम अध्याय : समकालीन कवियों से तुलना और अज्ञेय का स्थान

(क) जयशंकर प्रसाद

(ख) गिरिजाकुमार माथुर

(ग) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(घ) भारतभूषण अग्रवाल

(ड.) शमशेर बहादुर सिंह

❖ उपसंहार

- उपलब्धि एवं सीमाएं
- कवि का साहित्य जगत में स्थान

मेरे इस शोध प्रबंध का प्रारूप पांच अध्यायों में विभक्त है, जिसकी संक्षिप्त रूपरेखा इस प्रकार है–

- ❖ प्रथम अध्याय में अज्ञेय जी की जीवन दृष्टि एवं वैचारिक धरातल व उसके स्वरूप को भी वर्णित कर, उनके काव्य पर बौद्ध दर्शन एवं औपनिषद चिन्तन को भी स्पष्ट कर व्यक्त किया जाएगा ।
- ❖ द्वितीय अध्याय का शीर्षक है – 'औपनिषद चिन्तन एवं अस्तित्ववादी चिन्तन का प्रभाव अज्ञेय जी ने काव्य संसार को 19 अमूल्य संग्रह प्रदान किए हैं जिनमें उन्होंने औपनिषद एवं अस्तित्ववाद की विविधता के साथ अभिव्यक्ति की है उन्हीं के आधार पर अज्ञेय पर इनके प्रभाव को स्पष्ट किया जाएगा । साथ ही औपनिषद एवं अस्तित्ववादी अवधारणा को भी वर्णित किया जाएगा ।
- ❖ तृतीय अध्याय का शीर्षक है – 'बौद्ध दर्शन की अवधारणा' – इस नाम से ही स्पष्ट है कि बौद्ध दर्शन का सम्पूर्णता से वर्णन किया जाएगा । उसके तीनों पक्ष – प्रमुख तत्व, धार्मिक तत्वों एवं सामाजिक तत्वों आदि सभी का विस्तार से वर्णन किया जाएगा ।
- ❖ चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है – 'अज्ञेय के काव्य में मिथकीय अवधारणा' इसके अंतर्गत मिथक के दार्शनिक एवं धार्मिक पक्ष के साथ अज्ञेय द्वारा काव्य में प्रयुक्त मिथकीय चरित्र, प्रतीकों एवं घटनाओं को भी प्रस्तुत किया जाएगा ।
- ❖ पंचम अध्याय का शीर्षक है – 'समकालीन कवियों से तुलना एवं अज्ञेय का स्थान' । इस अध्याय में हिन्दी के प्रमुख कविकारों – जयशंकर प्रसाद, गिरिजाकुमार माथुर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, भारतभूषण अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह आदि के साथ तुलनात्मक अध्ययन करते हुए हिन्दी काव्य में श्री अज्ञेय के स्थान को रेखांकित किया जाएगा ।

उपसंहार

- उपलब्धि एवं सीमाएं
- कवि का साहित्य जगत में स्थान – आदि को वर्णित किया जाएगा

आधार ग्रंथ

बौद्ध धर्म दर्शन पर आधारित पुस्तकें

1. उपाध्याय, डॉ0 भरत सिंह । बौद्ध दर्शन एवं अन्य भारतीय दर्शन । मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन । प्रथम । मुद्रण ।
2. उपाध्याय, आचार्य बलदेव । बौद्ध – दर्शन मीमांसा । चौखम्बा प्रकाशन । पुनर्मुद्रित, 2011 । मुद्रण।
3. नरेन्द्रदेव, आचार्य । बौद्ध धर्म दर्शन । मोतीलाल बनारसीदास। प्रथम, मुद्रण ।
4. Canadi, L. Revival of Buddhism in Modern India. Ashutosh Publishing House. First, Print

अज्ञेय पर किया गया शोध कार्य

- कुमार, कमल। *अज्ञेय की काव्य संवेदना* । दिल्ली : प्रेम प्रकाशन मंदिर प्रथम 1997। मुद्रण ।
- कुलश्रेष्ठ, डॉ0 मथुरेश नन्दन । *अज्ञेय का अन्तः प्रक्रिया साहित्य* । इलाहाबाद : चित्रलेखा प्रकाशन, प्रथम 1984। मुद्रण।
- गौतम, सुरेश । *अज्ञेय और प्रयोगवादी काव्य* । दिल्ली : आलोक पर्व प्रकाशन, प्रथम 1997 । मुद्रण ।
- जासूद, प्रा0 नामदेव । *अज्ञेय : साहित्य और चिंतन* । कानपुर : अतुल प्रकाशन, प्रथम 2012 । मुद्रण ।
- पटेल, भोलाभाई । *अज्ञेय : एक अध्ययन (आधुनिक एवं पाश्चात्य प्रभावों के संदर्भ में)*। दिल्ली : वाणी प्रकाशन प्रथम 1983, द्वितीय 2002 । मुद्रण ।
- पालीवाल, कृष्णदत्त । *अज्ञेय : कवि कर्म संकट* । दिल्ली : किताब घर प्रकाशनय मुद्रण ।
- पालीवाल, कृष्णदत्त । *अज्ञेय : विचार का स्वराज*। दिल्ली : प्रतिभा प्रतिष्ठान, प्रथम 2010 । मुद्रण ।
- प्रसाद, डॉ0 राजेन्द्र। *अज्ञेय कवि और काव्य*। दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम 2001 । मुद्रण ।

- भारद्वाज, अरूण । *अज्ञेय और इलियट* । दिल्ली : साहित्य सहकार, द्वितीय संस्करण 2001। मुद्रण ।
- भावुक, डॉ0 कृष्णा । *अज्ञेय की काव्य चेतना* । दिल्ली : अशोक प्रकाशन, प्रथम 1972। मुद्रण ।
- शर्मा, ब्रजमोहन । *कवि अज्ञेय विश्लेषण और मूल्यांकन* । दिल्ली : इतिहास शोध संस्थान, प्रथम 1993 । मुद्रण ।
- मिश्र, डॉ0 राजेन्द्र । *अज्ञेय : विचार और कविता* । दिल्ली : तक्षशिला प्रकाशन, प्रथम 2002 । मुद्रण ।
- त्रिपाठी, डॉ0 चन्द्रकला । *अज्ञेय और नयी कविता* । वाराणसी : संजय प्रकाशन, प्रथम 1980 । मुद्रण ।
- त्रिपाठी, रमाशंकर । *अज्ञेय की सौन्दर्य संस्कृति* । रोहतक : मंथन पब्लिकेशंस, 1993 । मुद्रण ।
- सक्सेना, सुनीता । *अज्ञेय के काव्य में क्षण* । दिल्ली : हरीराम द्विवेदी पांडुलिपि प्रकाशन, प्रथम 1984 । मुद्रण ।
- सिन्हा, शैल। *प्रयोगवाद और अज्ञेय* । दिल्ली : अशोक प्रकाशन, प्रथम 1969 । मुद्रण।
- रविवर्मा, डॉ0 नरेन्द्र । *अज्ञेय और समकालीन काव्य* । इलाहाबाद : रचना प्रकाशन, प्रथम 1979 । मुद्रण ।

आलोचनात्मक ग्रंथ

- आचार्य, नन्दकिशोर। *अज्ञेय संचयिता*। दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, प्रथम 2001 । मुद्रण ।
- ऋषिकल, रमेश। *अज्ञेय की कविता : परम्परा और प्रयोग* । दिल्ली : वाणी प्रकाशन, प्रथम 2008 । मुद्रण ।
- कौर, डॉ0 फुलवंत । *अज्ञेय काव्य का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन*। दिल्ली : पराग प्रकाशन, प्रथम । 1992 । मुद्रण ।
- शुक्ल, ललित । *नया काव्य नये मूल्य* । दिल्ली : दि मैकलिन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड के लिए प्रकाशित : वार्ष्णेय प्रिंटिंग प्रेस, प्रथम 1975 । मुद्रण ।
- तिवारी, विश्वनाथप्रसाद । *अज्ञेय (आलोचना)* । दिल्ली : नैशनल पब्लिशिंग हाउस, संस्करण 1994 । मुद्रण ।
- माचवे, डॉ0 प्रभाकर । *हिन्दी के साहित्य–निर्माता 'अज्ञेय'* । दिल्ली : राजपाल एण्ड संज, संस्करण 1991 । मुद्रण ।
- मिश्र, विनोद कुमार । *आधुनिक हिन्दी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर : अज्ञेय और मुक्तिबोध* । दिल्ली : संदर्भ पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम 2009 । मुद्रण ।
- मुद्गल, डॉ0 शंकर वसंत । *कवियों के कवि : अज्ञेय* । कानपुर : क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रथम 2002 । मुद्रण ।
- सिंह, डॉ0 सदानंद । *प्रयोगवाद के संदर्भ में : अज्ञेय और उनका काव्य* । वाराणसी : कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, प्रथम 1983 । मुद्रण ।
- राजन, डॉ0 सी.एस.। *अज्ञेय के काव्य में प्रतिबिम्ब और मिश्रण* । इलाहाबाद : 1997 । मुद्रण ।
- राय, डॉ0 रामवचन । *नई कविता : उद्‌भव और विकास* । पटना : बिहारी हिन्दी ग्रंथ अकादमी : प्रथम 1974 । मुद्रण ।

❖ शोध कार्य हेतु सहायक पुस्तकें

- **शोध कार्य हेतु सहायक निबंध संग्रह –**

1. *अज्ञेय से सात संवाद* । दिल्ली : सरस्वती विहार, प्रथम, 1979 । मुद्रण ।
2. तिवारी, विश्वनाथप्रसाद । *अज्ञेय । दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1994* । मुद्रण
3. पालीवाल, कृष्णदत्त । *अज्ञेय से साक्षात्कार* । दिल्ली : आर्य प्रकाशन मंडल, प्रथम 2010 । मुद्रण ।

❖ शोध कार्य हेतु सहायक लेख –

1. पाठक, जितेन्द्रनाथ । *अज्ञेय ।* दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, जनवरी 1953। मुद्रण ।

   उपरोक्त लेख 'आलोचना' त्रैमासिक पत्रिका वर्ष 7 अंक 1 जनवरी, 1953 में नन्ददुलारे वाजपेयी द्वारा संपादित है ।
2. सिंह, शमशेर बहादुर । *कला और साहित्य में प्रयोगवाद जनवरी 1952* । मुद्रण ।

   उपरोक्त लेख *'आलोचना'* त्रैमासिक पत्रिका वर्ष 1 अंक 1 जनवरी 1952 (ट ५) में शिवदानसिंह चौहान द्वारा संपादित है ।